

शिष्यता के अनिवार्य तत्व

आत्मिक अगुवाई के लिए अनिवार्य तत्व
अगुवा निर्देशिका

मसीही चरित्र का विकास

पाठ 1: ईश्वरीय चरित्र का महत्व

परिचय

यह पाठ मुलभूत अनुयायीपन मॉड्यूल शीर्षक मसीही चरित्र का विकास का भाग है। जब मसीही लोग असफल हो जाते हैं और सेवकाई टुट जाती है, यह अक्सर अगुवों में चरित्र की कमी के कारण होता है। एक मसीही अगुवे को चरित्र के विकास को गंभीरता से लेना चाहिए, क्योंकि शिष्यता के लिए हमें मसीह के समान चरित्र में बढ़ने की आवश्यकता है। यह मॉड्यूल कई मसीही चरित्र की जांच करेगी जो कि एक सेवक अगुवापन के विकास के लिए ज़रूरी है। हम देखेंगे कि इन चरित्रों के बारे में बाइबल क्या सिखाती है, और यीशु के उदाहरण और अन्य लोग उसका प्रदर्शन करते हैं। ईश्वरीय चरित्र सभी मसीह के चेहों के जीवन में स्पष्ट रूप से नज़र आना चाहिए, खासतौर पर वे जो दूसरों की अगुवाई करते हैं।

इसके श्रोतागण

इस पाठ के श्रोतागण वे मसीही लोग हैं जो अपने विश्वास में परिपक्व हो रहे हैं और परमेश्वर की सेवा करने की इच्छा रखते हैं। यह पाठ खासतौर उन लोगों के लिए उपयोगी है जो पास्टर, कलीसिया के अगुवों, प्रशिक्षक और शिक्षक हैं, उन लोगों के लिए भी जो परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते में बढ़ना चाहते हैं।

अगुवों की निर्देशिका आपको अगुवा बनने की तैयारी में मदद करती है। इन पाठों का प्रयोग आप अन्य मुलभूत अनुयायीपन के सामाग्री के साथ कर सकते हैं जो ऑनलाईन उपलब्ध है www.dehindi.org

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing



मसीही चरित्र का विकास

पाठ 1: ईश्वरीय चरित्र का महत्व

उद्देश्य

यह पाठ परमेश्वर के चरित्र के महत्व, प्रकृति और विकास को रेखांकित करता है, और कैसे इसकी कमी से हम परमेश्वर की सेवा करने में असफल हो सकते हैं।

अगुवों के लिए बिन्दू

हम जो गुप्त में करते हैं वो ही चरित्र है, जब हम सोचते हैं कि कोई भी हमें नहीं देख रहा। यह हम कौन है उसे परिभाषित करता है; वो ही हमारा असली स्वभाव है। एक अच्छा चरित्र का अर्थ है यीशु के समान बनते जाना— लेकिन हम अभी वहां नहीं हैं। चरित्र निर्माण हमारे पूरे जीवनकाल तक होता रहेगा। मरने के बाद हम अपनी सेवकाई और परिवार को पीछे छोड़ देंगे, लेकिन हमारा चरित्र हमेशा याद रहेगा। जब आप अपने प्रतिभागियों को निर्देश देते हैं, ध्यान रखें कि मसीही चरित्र कक्षा में नहीं सीखा जा सकता। यह एक प्रक्रिया है जिसमें समय लगता है जब हम सोचने, बोलने और कार्य करना सीखते हैं जिससे की परमेश्वर की महिमा हो। आपका काम अपने प्रतिभागियों को चरित्र के विकास की आवश्यकता को समझाना है, और कैसे उसे हासिल करना है। परमेश्वर के ऊपर भरोसा रखें कि वो आपकी मदद करें, और जो कुछ भी वो आपको सीखाते हैं उसके लिए तैयार रहें!

परिचय

दो या तीन प्रश्नों को समूह में पूछने के लिए चुनें।

- ❖ 'चरित्र' शब्द का अर्थ आपके लिए क्या है?
- ❖ यदि आपको किसी का चरित्र वर्णन करना हो, तो आप कौन से शब्द प्रयोग करेंगे? (आप किसी प्रसिद्ध व्यक्तित्व, अपने पास्टर या अपने कक्षा में किसी को चुन सकते हैं)।
- ❖ कौन सी चरित्र विशेषता आपको अपने बारे में सबसे ज़्यादा पंसद है? आपको कौन सा सबसे कम पंसद है?
- ❖ एक व्यक्ति में चरित्र का कैसे विकास होता है? क्या आप अपने चरित्र के साथ ही पैदा हुए हैं, या इसे सीखा जा सकता है?
- ❖ कौन सी चरित्र विशेषताएं आपने अपने माता-पिता से पाई हैं? क्या आपके जीवन में ऐसा कोई समय था जब आप किसी को अपना उदाहरण मानते हो (शायद माता-पिता, भाई-बहन या शिक्षक) और उनकी नकल किया करते हो? उसके क्या परिणाम हुए?



अध्ययन

समूह को निम्नलिखित बिन्दुओं पर निर्देश दें।

शिक्षा:

- ❖ **परमेश्वर का हृदय होना:** परमेश्वर हमारे जैसे लोगों का प्रयोग पृथ्वी में अपने महान योजना के लिए करना चाहते हैं: लोगों के साथ पुनः मेलमिलाप जो एक समय में उनके शत्रु थे! परमेश्वर के राज्य में एक उपयोगी सेवक बनने के लिए हमें उनके आज्ञाकारी होना है और हृदय में सही सोच होना चाहिए। मसीही लोगों को ईश्वरीय चरित्र का विकास करना चाहिए; यह व्यक्तिगत शिष्यता का एक पहलू है।
- **ईश्वरीय चरित्र क्या है?** हम इस बारे में बात कर रहे हैं जब हम 'ईश्वरीय चरित्र' की बात करते हैं:
 - ईश्वरीय चरित्र प्रमाणित होता है जब हमारा दृष्टिकोण, हमारी सोच, हमारी नीयत और हमारी अभिलाषा मसीह के समान होता है।
 - ईश्वरीय चरित्र का अर्थ सही और गलत में पहचान, नैतिकता और सदाचार के बोध से कही अधिक है। यह बुराई के ऊपर भलाई को चुनना है भले ही वो कितना भी असुविधाजनक हो।
 - ईश्वरीय चरित्र परमेश्वर को पहला स्थान देता है, दूसरों को दूसरा स्थान और स्वयं को तीसरा।
 - ईश्वरीय चरित्र बाइबल में दिये प्रशंसा के योग्य चरित्र विशेषताओं का प्रतीक है, जिसमें आत्मा के फल भी शामिल है, जो यीशु मसीह के स्वभाव को इस अविश्वासी संसार में प्रदर्शित करता है।
 - परमेश्वर की इच्छा है कि हम सब में ईश्वरीय चरित्र हो!
- **मसीह के स्वरूप के अनुरूप होना:** जब हम पवित्रिकरण की प्रक्रिया से गुजरते हैं, हम और भी यीशु मसीह के समान बनते जाते हैं। इससे हमें उत्साहित और आनंदित होना चाहिए! यीशु जीवन की परीक्षाओं से बचें नहीं थे, और हम भी नहीं बचेंगे, जब हम उनके मार्ग पर चलेंगे। इन वचनों पर ध्यान दें:
 - रोमियों 8:29
 - 2 कुरिन्थियों 3:18
 - रोमियों 12:2
 - कुलुस्सियों 3:9-10
 - रोमियों 13:14
- **मसीह में बने रहना, अच्छे फल फलना:** परमेश्वर चाहते हैं कि हम उन में बने रहे— अपने विचारों, शब्दों, कार्यों और व्यवहार में उनके समीप रहे। उनकी उपस्थिति के प्रति जागरूकता हमारे सोचने के तरीके और कार्यों को प्रभावित करें। पवित्र आत्मा हमें आत्मिक फल को फलाने में हमारी मदद करते हैं जब हम उनके साथ में बने रहते हैं।
 - यूहन्ना 15:4-5



कार्य:

- एक बड़े समूह या फिर छोटे समूह में, प्रतिभागियों को सोचने को कहे कि यीशु मसीह के क्या चरित्र विशेषताएं होगी जब वे इस संसार में थे। उन्हें आप कैसे वर्णन करेंगे? वो कैसे थे?
- दिए गए पदों को पढ़ें। समूह के रूप में, उल्लेखित चरित्र विशेषताओं पर विचार-विमर्श करें और उनकी सूची चार्ट पेपर या बोर्ड पर बनायें।
 - 1 यूहन्ना 4:8
 - कुलुस्सियों 3:12–15
 - गलातियों 5:22–23
 - 1 कुरिन्थियों 13:4–13

शिक्षा:

- ❖ **ईश्वरीय चरित्र का क्यों महत्व है:** यह अधिकतर लोगों के लिए महत्व न रखता हो कि हमारा असली मकसद और नीयत क्या है जब तक कि हम कानून-व्यवस्था के अधीन हैं और अपने में रहते हैं। यदि हम कुछ 'बहुत ही गलत' न करें, तब तक संसार की दृष्टि में स्वीकार्य हैं। लेकिन, परमेश्वर चाहते हैं कि हम मसीह के समान बनें। ऐसा क्यों?
- **ईश्वरीय चरित्र का अनंत तक मूल्य है:** जैसे हम एक नई भाषा को सीखने, नए कौशल को पाने, या अपने शरीर को नये कार्य के लिए प्रशिक्षित करने के लिए मेहनत करते हैं, वैसे ही हमें अपने चरित्र का निर्माण करने के लिए मेहनत करना चाहिए। हमारे चरित्र का अनंतकालीन मूल्य है! हमें 'राजकीय पुजारी' के रूप में परमेश्वर की सदा सर्वदा सेवा करने के लिए बनाया गया है।
 - 1 पतरस 2:4–12
 - प्रकाशितवाक्य 5:10
- **ईश्वरीय चरित्र से हम परमेश्वर के कार्य करने की योग्यता पाते हैं:** जब परमेश्वर किसी को किसी स्पष्ट रीति से कार्य करने को कहते हैं, वो उस व्यक्ति को बुलाते हैं जिसका हृदय उसके हृदय के करीब है (या जिसका हृदय परमेश्वर के हृदय के पीछे है)। ईश्वरीय चरित्र ध्यान रखता है कि कार्य निरंतर चलता रहे, जो किसी भी पाप या स्वार्थी निर्णय के द्वारा स्थगित न होने पाये। हमारा चरित्र प्रकट करता है कि क्या हम परमेश्वर के अनुसार से या फिर अपने अनुसार से जीवन जीना चाहते हैं।
 - 1 शमूएल 16:7
 - प्रेरितों 13:22
- **ईश्वरीय चरित्र का परमेश्वर के आगे दिखावा नहीं किया जा सकता:** परमेश्वर हम सबको न केवल हमारे कार्यों लेकिन हमारे अंदरूनी जीवन के लिए भी जिम्मेदार ठहराते हैं। हम आसानी से लोगों को मूर्ख बना सकते हैं, लेकिन परमेश्वर को नहीं। क्योंकि हमारा हृदय उसके सामने खुला हुआ है, कुछ भी उनकी नज़रों से नहीं बच सकता। यीशु ने अक्सर उन लोगों को डांटा जो पवित्र होने का दिखावा करते थे,



लेकिन उन लोगों के हृदय परमेश्वर से दूर थे। यीशु ने उन्हें शापित कहा; जब वे आशिष की उम्मीद कर रहे थे!

- लूका 12:2
- मत्ती 23:25–26

➤ **हमारा चरित्र हमारे भविष्य के चुनावों को निर्धारित करता है:** हम वही बन जाते हैं जो हम आदतन करते हैं। हम सदा ईमानदार रहने से सच्चे ठहरते हैं। हम आनंदित केवल तब ही साबित नहीं होते जब समय अच्छा चल रहा होता है, लेकिन हम तब साबित होते हैं जब मुश्किलों का सामना करते हुए भी हम परमेश्वर के प्रति धन्यवादी रहते हैं। चरित्र ही प्रकट करता है कि हम भविष्य में क्या करेंगे। निर्णय, चुनाव, सोच और वचन हमारे हृदय से बहकर निकलता है। परमेश्वर के द्वारा प्रयोग किये जाने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि हमारा चरित्र मसीह के समान हो।

- मत्ती 12:35
- नीतिवचन 4:23

➤ **हमारा चरित्र प्रकट करता है कि हम किसे प्रेम करते हैं:** हम या तो परमेश्वर को और उनकी इच्छा को पहला स्थान देते हैं या फिर अपने आपको ऊंचा करते हैं। स्वार्थीपन सारी बुराई और चरित्र के खामियों का जड़ है। इससे प्रकट होता है कि हम परमेश्वर से अधिक अपने आपको प्रेम करते हैं; यह अनाज्ञाकारिता और मूर्तिपूजा है।

- नीतिवचन 11:20
- यूहन्ना 14:15

❖ **सदाचार, नैतिकता और चरित्र:** विश्व का नज़रिया मनुष्य के प्रकृति के बारे में असहमत है—चाहे ये अधिकांशतः अच्छा हो बुराई की क्षमता के साथ या पूर्णतः बुरा हो अच्छाई की क्षमता के साथ। विश्व का नज़रिया और धर्म सदगुण और नैतिकता के बारे में मतभेद रखते हैं, इसलिए ये महत्वपूर्ण है कि हमें पता होना चाहिए कि उन शब्दों का अर्थ क्या है, और हमारे अभिव्यक्ति का माप कहा से आ रहा है।

➤ **सदाचार** एक अच्छे चरित्र की अभिव्यक्ति है, जिसका सही रूप से प्रयोग किया गया है। वो न तो कम है और न अति है, लेकिन सटीक रूप से मसीह के चरित्र जिसको पाने की कोशिश हम कर रहे हैं उसके अनुरूप में है।

- यह एक ऐतिहासिक विचार है जो प्राचीन ग्रीस से लिया गया है। उदाहरण के लिए, सदगुण साहस, भय का विलोम नहीं है। लेकिन साहस तो केन्द्र बिन्दू है जिसमें कायरता कमी वाला भाग और भंगशीलता अति वाला भाग है। उदारता एक सदगुण है जो कि लालच एक तरफ और अत्याधिक खर्चिलापन दूसरी तरफ के बीच में है। हम इसकी अन्य आने वाले पाठों में जांच करेंगे।

➤ **नैतिकता** अच्छाई और बुराई, भले और बुराई की आस्था प्रणाली है। अन्य विश्व दृष्टिकोण हैं जिनमें कई भिन्न विचार हैं।

- कुछ लोग कहेंगे कि हमें कोई नुकसान नहीं पहुंचाना चाहिए। अन्य लोग कहेंगे कि जब तक हम उसे अपने मूल्यों के अनुसार है तो फिर ठीक है। लेकिन



मसीही होने के नाते अच्छा और बुरा (सही या गलत) होने का माप हमारे अंदर नहीं पाया जाता, लेकिन बाइबल में पाया जाता। नये नियम में, यीशु मसीह, जो परमेश्वर की व्यवस्था के सिद्ध अभिव्यक्ति है, स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं की क्या सही है और क्या गलत। अपने स्वयं के कार्यों को अपने स्वयं के बनाये माप से न्यायसंगत ठहराना नहीं बल्कि हमें परमेश्वर को सत्य के लिए देखना है (जैसा कि उसके वचन बाइबल में प्रकट है)।

- **चरित्र** एक विकसित प्रतिक्रिया है जो कि सही काम करना है भले ही उसके लिए हमें अपनी इच्छा और आराम का बलिदान देना पड़े। इसके लिए पूरे विचार के साथ कार्य, सोच समझकर चुनाव करना और अनुशासन की आवश्यकता है। जब हम अपने कार्यों का मूल्यांकन करते हैं, हमें अपने आप से पूछना है कि यदि हम सही और भला कर रहे हैं। हम अपने प्रेरणा का मूल्यांकन करने के लिए कुछ प्रश्नों का प्रयोग कर सकते हैं जैसे:

- क्या यह सबसे पहले परमेश्वर के प्रति प्रेम के लिए किया गया है?
- क्या यह दूसरों के प्रति प्रेम के लिए किया गया है?
- क्या यह आत्म-नियंत्रण, या फिर स्वार्थ से किया गया है?

❖ **चरित्र कैसे निर्माण होता है:** हम में से कोई भी स्वभाव से सदगुण नहीं है (या सिद्ध चरित्र)। लेकिन हम सही चुनाव करके सदगुणी बन सकते हैं। दूसरी भाषा सीखने के बारे में सोचिए, केवल उसी को विशेषतः प्रयोग करें जब तक की आपका दिमाग केवल उसी में नई भाषा में सोचने न लग जाये, और फिर उसे अपनी मात्र भाषा के ऊपर प्राथमिकता देना। परमेश्वर हम में मसीह के समान चरित्र को बनाना चाहते हैं, और उस प्रक्रिया में हमारी मदद भी करना चाहते हैं। हम परमेश्वर के साथ कार्य कर सकते हैं और उनके प्रशिक्षण को स्वीकार कर सकते हैं जैसे वह हमारे चरित्र को कई तरह से बनाते हैं:

- **चुनाव:** हम कई सौ छोटे-छोटे निर्णय प्रतिदिन लेते हैं— कैसे किसी को प्रतिक्रिया दें जो आपको भड़का रहा है, हम कैसे ट्रैफिक में या बाज़ार में व्यवहार करें, हम कैसे सोचें और कैसे बात करें। परमेश्वर हमें कई अवसर प्रदान करते हैं कि हम सदाचार व्यवहार और उसके चरित्र के रवैये को चुने। हो सकता है कि इसमें कई समय लगे जब तक कि हम उसे सहजता से करने की स्थिति में नहीं पहुंच जाते। हम सदगुणी होना अपने चुनाव के द्वारा करते हैं।

- लूका 16:10
- यहोशू 16:10
- नीतिवचन 16:9

- **चुनौतियां:** हमारे संघर्षों और चुनौतियों के द्वारा ही परमेश्वर हमारे चरित्र को बेहतर बनाते हैं। यदि हमने कभी भी मुश्किलों का सामना नहीं किया तो हमारे चरित्र को कभी चुनौती नहीं मिलेगा! समृद्धि के समय में उदार होना कमी-घटी में होने से ज़्यादा आसान है। सच्चा और साहसी बनना आसान है जब हमें कोई खतरा नहीं है, तब नहीं जब कोई खतरा न हो! लेकिन सदगुण का कठिन समय में अभ्यास करना ही हमारे अच्छे चरित्र को प्रमाणित करता है।

- याकूब 1:2-4
- 1 कुरिन्थियों 10:13



○ यर्मियाह 12:5

- **समुदाय:** परमेश्वर अन्य लोगों का निरंतर मसीह के समान बनाने में हमारी मदद के लिए प्रयोग करते हैं। हमारे दोस्त हमारे चरित्र को बेहतर बनाने में मदद या रुकावट डाल सकते हैं—यह हमारे संगति पर निर्भर करता है! हालांकि हमें हमेशा केवल यीशु पर एक सिद्ध उदाहरण के रूप में नज़र लगाये रखना है, लेकिन हम मसीही पुरुष और स्त्री बहुत कुछ सीख सकते हैं जो यीशु के पीछे हम से अधिक समय से चल रहे हैं। उसके साथ ही, हमारा चरित्र परिस्थितियों से अधिक उन लोगों के द्वारा विकसित होता है जो अक्सर हमारी परीक्षा और परिक्षण करते हैं। यह सोचना आसान है कि हम कितने दयालु और धीरजी इंसान हैं जब तक कि हम किसी ऐसे इंसान से नहीं मिलते जिसे बहुत ही असुविधाजनक समय में हमारी ज़रूरत पड़ती है!

- 1 यूहन्ना 4:19–21
- फिलिप्पियों 2:3–4
- याकूब 2:14–17

- ❖ **पतित चरित्रों का उदाहरण:** परमेश्वर का वचन नैतिक कहानियों की श्रृंखला या चेतावनी की कथा मात्र नहीं है। बाइबल का प्रत्येक वचन ईश्वरीय प्रशिक्षण के लिए उपयोगी है, जिसमें मैं से कुछ कहानियों के बारे में हम सोचने लगते हैं कि वे यहां हैं ही क्यों (2 तीमुथियुस 3:16)। निम्नलिखित बाइबल की घटनाएं गलत चुनावों के नतिजों को प्रदर्शित करता है। यह अगुवों के पतन का कारण हो सकता है, और जीवन को एक अथाह निराशा की ओर ले जा सकता है।

- **शिमशोन:** परमेश्वर ने शिमशोन को अपने चुने हुए लोगों के शत्रुओं को हराने लिए बुलाया, और शिमशोन को अलौकिक सामर्थ से भर दिया ताकि वो उस कार्य को पूरा कर सके। शिमशोन परमेश्वर के लिए आश्चर्यजनक कार्यों को करने लगा, लेकिन उसने अपना पूरा जीवन परमेश्वर को समर्पित नहीं किया जो कि उसे करने की आवश्यकता थी।

- शिमशोन को एक औरत बहलाती है कि वो अपने ताकत का राज़ बता दे और अपना नाज़ीर होने का शपथ तोड़ देता है (न्यायियों 13:7, गिनती 6:6)। औरतें उसकी कमज़ोरी थी, और उसके कारण वो अपनी पूरी क्षमता को प्राप्त नहीं कर पाता।
- शिमशोन की कमज़ोरी उसकी अयोग्यता थी कि वो परमेश्वर की इच्छा के आगे अपनी अभिलाषा को पहले रखता है। शिमशोन के पास काफी साहस था लेकिन उसमें ईमानदारी की कमी थी। शिमशोन घमंडी था और उसने परमेश्वर के अधिकार को अपने जीवन में नहीं पहचाना।
- परमेश्वर का स्वर्गदूत प्रकट करता है कि शिमशोन 'इस्राएलियों को फिलिस्तीनों के हाथों से छुड़ायेगा' (न्यायियों 13:5), लेकिन उसके जीवनकाल में वे लोग छुड़ाये नहीं जाते। यदि शिमशोन अपने चरित्र में कमज़ोर नहीं होता तो वो परमेश्वर के लिए बहुत कुछ कर पाता!
- अंत में, शिमशोन अपने चुनावों को लेकर पछताता है और पूरे दिल से परमेश्वर की इच्छा को पूरे करने को इच्छुक होता है। इस कारण, परमेश्वर उसे आखिरी बार सामर्थ प्रदान करते हैं (न्यायियों 16:28–31)। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके दिल की ये इच्छा उसे विश्वास का पुरुष के रूप में याद करने के योग्य बनाता है (इब्रानियों 11:17, याकूब 2:21)।



- **सुलैमान:** सुलैमान परमेश्वर के द्वारा अद्वितीय बुद्धि का वरदान प्राप्त मनुष्य था, लेकिन उसमें अच्छे चरित्र की कमी थी। उसका पिता, राजा दाऊद जो एक शानदार विरासत छोड़कर गया था, उसके विपरीत सुलैमान की प्रतिष्ठा शर्मनाक है। वो दाऊद और बेतशेबा का दूसरा पुत्र था, और बचपन से ही परमेश्वर द्वारा प्रेम किया गया था। वो मिस्र के फिरौन की बेटी से राजनैतिक गठबंधन के लिए विवाह करता है, लेकिन वो कई औरतों को चाहने की इच्छा को नियंत्रण में नहीं रख पाता। सुलैमान 700 पत्नियां और 300 रखैलों को रखता है, जिसमें परमेश्वर के द्वारा इस्राएलियों को विवाह के लिए मना किये गये कई अन्यजाति से थे। यही औरतें सुलैमान को बहला-फुसलाकर उसके परमेश्वर की भक्ति से अपने झुठे देवताओं और मूर्ति की आराधना करने को भटकाती हैं।
 - सुलैमान विश्वासयोग्य, आत्म-नियंत्रित या नम्र नहीं था। वो अपने अभिलाषाओं को परमेश्वर और उसके पीछे चलने वालों से आगे रखता है। वो अपने सदगुण के अनुसार कार्य नहीं कर रहा था, लेकिन भोग-विलास में अधिक व्यस्त था। यद्यपि, वो कई अच्छे कार्य को अपने राज्य में पूरा करता है जिसमें मंदिर निर्माण, आस-पास के राज्यों के साथ शांति कायम करना और सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत और कुछ नीतिवचन और भजनसंहिता को लिखना शामिल है (1 राजा 3:7-9, 1 राजा 11:1-6, नहेम्याह 13:26)।
 - अंत में, वो पश्चाताप नहीं करता और ना ही परमेश्वर की ओर लौटता है, लेकिन संसारिकता और स्वार्थी लक्ष्यों के पीछे मुड़ता है। सुलैमान के पास बुद्धि थी लेकिन दूसरी तरफ उसके पास मजबूत चरित्र नहीं था।
- **हनन्याह और सफीरा:** प्रेरितों के कार्य पुस्तक में अधिकतर घटना का वर्णन पूर्वकालीन कलीसिया के एक-दूसरे के साथ अच्छे संबंध के बारे में है, और परिवर्तित जीवन जीने के बारे में है क्योंकि उनका सामना यीशु मसीह के साथ हुआ था। कलीसिया जो भी उनके पास होता वो एक-दूसरे के साथ मिलबांट लेते, बुलावट को पहला स्थान देते, और अपने चुनावों और कार्यों के द्वारा परमेश्वर को आदर देते। यह एक ध्यान देने योग्य पति और पत्नी, हनन्याह और सफीरा के अपवाद की घटना है।
 - प्रेरितों 4:32-37 में हम बरनाबास को जमीन बेचकर कलीसिया को पैसा देते देखते हैं। हनन्याह और सफीरा उस विश्वासियों के समुह के भाग थे और वे भी अपना सबकुछ गरीबों को देते हुए लोगों को दिखाना चाहते थे। लेकिन वे कलीसिया को धोखा देने की कोशिश करते हैं इस दिखावे के साथ कि वे अपना सारा पैसा दान कर रहे हैं। सज़ा के तौर पर, वे दोनों प्रेरित के अधिकार, और परमेश्वर झुठ के प्रति असहिष्णुता, पाखंड और बेमानी को हतोत्साहित करने के प्रकटीकरण के द्वारा मारे जाते हैं।
 - हनन्याह और सफीरा परमेश्वर और दूसरों को प्रेम नहीं करते थे, लेकिन वे अपने स्वार्थी अभिलाषाओं को आगे रखते हैं। वे लोग ईमानदारी, साहसी, दयालु, विश्वासयोग्य या नम्र नहीं थे, लेकिन वे स्वार्थीपन के साथ चुनाव करते हैं, लेकिन अंत में वे अपने खुद के जीवन को भी नहीं बचा पाते।



- **मसीही के हृदय को समर्पण:** एक अच्छा चरित्र प्रत्येक मसीह के लिए अनिवार्य है—खासतौर पर अगुवों के लिए। ईश्वरीय चरित्र का विकास यीशु के हृदय को समर्पण करना है। यह परमेश्वर के मार्ग और दूसरों की भलाई को अपने से पहला स्थान देना है...

गृहकार्य

आप अपने प्रतिभागियों को गृहकार्य देना चाहेंगे। उन्हें बाइबल पढ़कर 25 ईश्वरीय चरित्रों को खोजना है। बाइबल में कोई भी प्रशंसनीय व्यवहार या कार्य ईश्वरीय चरित्र का गुण है। इससे वे स्वयं के चरित्र के बारे में विचार कर सकेंगे और सदगुण के साथ जीवन जीने के महत्व को जान पायेंगे।

विचार—विमर्श

- ❖ कब आपके जीवन में किसी खास चरित्र की कमी के कारण आप परमेश्वर के कार्य को करने से रह गये? क्या आप किसी को जानते हैं जो सेवकाई में असफल हो गया क्योंकि उसमें परमेश्वर के चरित्र की कमी थी? कैसी परिस्थितियां थी? क्या वे अपने पतन से कुछ सीख पाये?
- ❖ कुछ लोग सोचते हैं कि हमें 'अपना स्वयं' बने रहना चाहिए, आर यदि अन्य प्रकार से कोशिश किया तो हम बेमान हैं। क्या आप सहमत हैं? यदि हम प्रकृति से सदगुणी नहीं हैं तो क्या सदगुणी होने के लिए प्रयास करना गलत है जब तक की वह हमारा दूसरा स्वभाव नहीं बन जाता?
- ❖ जीवन की क्या परिस्थितियां हैं जो मनुष्य की बुराई को बाहर प्रकट करता है? हम कैसे प्रतिदिन के चुनाव के द्वारा उसे टाल सकते हैं?

प्रार्थना

प्रार्थना के साथ समाप्त करें। प्रार्थना करें कि आपके प्रतिभागी ईश्वरीय चरित्र का पीछा करें जो कि धीरज धरने के द्वारा पैदा होता है। प्रार्थना करें कि वे परमेश्वर को पूरे हृदय से प्रेम करें (थोड़ा सा नहीं)। प्रार्थना करें कि वे परमेश्वर को प्रथम स्थान दें और सदगुण से भरे अगुवें बने, परमेश्वर के हाथों में उपयोगी बने जो उसके लोगों के बीच में महान कार्य करें।



बाइबल में ईश्वरीय चरित्र विशेषता

कोई भी चरित्र जो बाइबल में प्रशंसनीय है वे ईश्वरीय चरित्र विशेषता हैं। निम्नलिखित पदों को पढ़ें और अपने शब्दों में चरित्र की विशेषता का वर्णन करें। कुछ पदों में एक से ज़्यादा विशेषता हो सकते हैं—उसे चुने जिसका आपने पहले वर्णन नहीं किया।

	पद	विशेषता	वर्णन
1	इफिसुस 4:2		
2	1 कुरिन्थियों 9:25		
3	रोमियों 16:19		
4	2 कुरिन्थियों 1:12		
5	नीतिवचन 12:22		
6	याकूब 1:5		
7	इब्रानियों 10:36		
8	मरकुस 4:40		
9	कुलुस्सियों 3:13		
10	नीतिवचन 14:21		
11	गलातियों 5:23		
12	इब्रानियों 12:28		
13	फिलिप्पियों 2:3		
14	इब्रानियों 13:5		
15	1 थिस्सलुनीके 5:16–17		
16	इफिसियों 4:32		
17	कुलुस्सियों 3:23		
18	यहोशू 1:9		
19	नीतिवचन 10:9		
20	नीतिवचन 21:15		
21	गलातियों 6:5		
22	यूहन्ना 13:34		
23	नीतिवचन 21:21		
24	1 पतरस 2:17		
25	मत्ती 5:9		

क्या आप अन्य ईश्वरीय चरित्र विशेषता को सोच सकते हैं जो कि इस सूची में नहीं है?